

मद्रास तट की वाणिज्यिक ट्रॉल मात्स्यकी का तुलनात्मक अध्ययन

के. सत्यनारायण राव और पी. के. महादेवन पिल्लै सी एम एफ आर आइ का मद्रास अनुसंधान केन्द्र,

मद्रास - 600008

प्रस्तावना

मद्रास तट की मात्स्यकी संपदाओं का विदोहन (Exploitation) परंपरागत रूप से देशज क्राफ्ट और गिअरों द्वारा किया जाता था। पर पिछले दो-तीन दश वर्षों में वाणिज्यिक ट्रॉलिंग के आगमन और नितलस्थ मछलियों और झींगों के विदोहन के विकास के फलस्वरूप इस तट की यंत्रीकृत मात्स्यकी का काफी विकास हुआ है।

मौसमिक परिचालन के कुछ नावों को छोड़कर अब मद्रास तट में परिचालित होनेवाले मुख्य यंत्रीकृत पोत ट्रॉलरें हैं, जो मद्रास मात्स्यकी बंदरगाह के पास के पुतुमनिकुप्पम में अवतरण करते हैं। सामाजिक-आर्थिक घटकों के कारण वर्तमान में पकड़ को पुतुमनिकुप्पम केंद्र तक ले जाने के लिए सभी ट्रॉलर कटामरीनों का आश्रय लेते हैं और मात्स्यकी बंदरगाह सिर्फ पोतों के लंगर डालने के लिए उपयुक्त करता है।

पुतुमनिकुप्पम से वर्ष 1981-85 की अवधि के दौरान प्राप्त यंत्रीकृत पोतों के पकड़-आकलन के अलावा इस केंद्र में अवतरण की गई मछलियों की पकड़ की मौसमिक प्रचुरता और इससे संबंधित पहलुओं पर कोई भी विस्तृत सूचना न मिली है। वर्तमान अध्ययन में पुतुमनिकुप्पम के ट्रॉलर अवतरण का विश्लेषण और अध्ययन, यहाँ की पकड़ की मौसमिक प्रचुरता, प्रति एकक का पकड़ प्रयास और मौसमिक उतार-चढ़ाव के संदर्भ में किया गया है।

मद्रास तट में परिचालन किए जाने वाले ट्रॉलर चार प्रकार के लंबाई वर्ग के होते हैं। ये 9.5-10 मी, 11 मी, 12 मी और 13-14 मी के हैं। 9.5-11 मी व 11 मी के पोत उत्तर-पूर्व तट के 30-40 मी के गहराई रेंच में मत्स्यन करते हैं और 12 मी और 11 मी के कुछ पोत 15-30 मी की गहराई के तटीय समुद्र में मत्स्यन

करते हैं। 13-14 मी के बड़े पोत श्रीहरिकोट्टा और नेल्लूर के 15-30 मी की गहराई के समुद्र में 3-4 दिन तक चिंगट का ट्रॉलिंग करते हैं।

महाजाल (ट्रॉल) से प्राप्त उत्पादन

वर्ष 1980-89 की अवधि में पुतुमनिकुप्पम केंद्र से ट्रॉलरों द्वारा 9,500 टन मछलियों का अवतरण हुआ। अधिक मत्स्यन प्रयास के साथ इस अवधि का अवतरण भी अधिक था। वर्ष 1980 के 1,416 टन उत्पादन की अपेक्षा वर्ष 1987 का उत्पादन 16,342 टन तक बढ़ गया और वर्ष 1989 में यह 23,953 टन तक बढ़ गया। वर्ष 1985-89 का मछली उत्पादन 1980-84 की अवधि से तिगुना अधिक दिखाया पड़ा। प्रति एकक के मत्स्यन प्रयास में भी वृद्धि दिखाई पड़ी।

वर्ष 1980-89 की प्रति एकक पकड़, मत्स्यन प्रयास और तिमाहवार पकड़ के संयोजित आंकड़े का विश्लेषण यह व्यक्त करता है कि अधिकांश तिमाहियों में एकक परिचालन के अनुसार पकड़ में भी वृद्धि दिखाई पड़ी। लेकिन प्रथम तिमाही में यह अनुपात कम था। वर्ष 1987 की दूसरी तिमाही में, पिछली तिमाही की अपेक्षा एकक परिचालन में 6% कमी के साथ पकड़ में 38% की वृद्धि अंकित की। वर्ष 1989 की तीसरी व चौथी तिमाहियों का अधिकतम पकड़ प्रयास यथाक्रम 767 कि ग्रा और 627 कि ग्रा थे। विभिन्न तिमाहियों की मौसमिक प्रवणता से यह दिखाई पड़ती है कि इस तट में, तीसरी तिमाही में सबसे अधिक उत्पादन हुआ जिसके बाद चौथी तिमाही का उत्पादन आता है।

इसका व्यक्त और विस्तृत चित्र मिलने के लिए दो-पांच वर्षों की अवधि के विभिन्न महीनों की संयोजित पकड़ और प्रयास का अध्ययन भी किया था। इसके अनुसार माहिक पकड़ एवं प्रयास बराबर ही देखा और वर्ष 1985-89 के

दौरान उच्चतम पकड़ और प्रयास हुए थे। तीसरी तिमाही में अधिकतम अवतरण हुआ और अगस्त महीना अवतरण का श्रृंग काल था।

विभिन्न वर्गों के मौसमिक उतार-चढ़ाव

ट्रालर मात्स्यिकी में योगदान करने वाले विभिन्न वर्गों में से 15 वर्गों को वर्ष 1980-84 और 1985-89 अवधि के दौरान मौसमिक उतार-चढ़ाव का अध्ययन करने के लिए चुन लिया। इनमें प्रमुख सुरा, कर्करिअस जातियाँ, राइजोप्रियोनोडोन जाति, स्केट्स, राइनोबाटस जातियाँ, रे, डैसिआटिस जातियाँ, ऐडटोबाटस जातियाँ, राइनोप्टीरा जातियाँ, सूत्रपक्ष ब्रीम, नेमिट्टीरस जातियाँ, मुल्लन, लिओगनाथिअस जातियाँ, सेक्यूटर जातियाँ, फीतामीन, ट्राइक्यूरस लेप्ट्यूरस, कैरंजिड्स, डेकाप्टीरस रसेल्ली, सेलरोइड्स लेप्टोलेपिस, कैराक्स जातियाँ, गोर्टाफिशस, यूपेनिअस जातियाँ, तुम्बिल, सौरिडा जातियाँ, क्रैकिर्स, जोनिअस जातियाँ, ओटोलिथस जातियाँ, सिल्वर-बिड्डीस, पेन्टाप्रियोन जाति, बैराकुडा, स्फिरीना जातियाँ, वाइट बेट, स्टोलिफोरस जातियाँ, पेनिआइड झीगा, पेनिअस इंडिकस, पी. सेमीसुल्केटस, मेटापेनिअस डोबसोनी, मेटापेनिओप्सिस जाति और पैरापेनिओप्सिस जाति कर्कट, पेट्यूर्नस जातियाँ, और शीर्षपाद, सीपिया जातियाँ और लोलिगो जाति हैं। अन्य वर्गों, में प्रियाकांतस हामरर, रेइनबो सारडीन, डसुमेरिया जाति, चपटी मछली, सिनोग्लोसस जातियाँ और प्सेटोडस इरुमी, इंडियन वाइटिंग, सिल्लागो सिहामा, ड्रिफ्ट-फिशस, अरिओम्मा इंडिकस और मोजारास, जेरस जातियाँ शामिल हैं।

प्रथम तीन तिमाहियों में सूत्रपक्ष ब्रीम की पकड़ अधिक थी और चौथी तिमाही में कम भी। चौथी तिमाही में फीतामीन का अच्छा अवतरण पाया गया। इस प्रकार मुल्लन का अवतरण भी प्रथम तीन तिमाहियों में अधिक और चौथी तिमाही में कम था। कैरंजिड की पकड़ का प्रतिशत भी दूसरी और तीसरी तिमाहियों में बढ़ गया। तुम्बिलों की पकड़ दूसरी और तीसरी तिमाहियों में अधिक थी और झीगों का योगदान चौथी तिमाही में अधिकतम था। हाल के अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि ट्राल मात्स्यिकी में बुल्स आई प्रियाकांतस हामरर और ड्रिफ्टफिश अरिओम्मा इंडिकस का प्रतिशत यथाक्रम 13-19 और 4 है।

चिंगट एवं मछली ट्राल की तुलनात्मक पकड़ प्रवणता

अक्टूबर, 1989 से जून 1991 की अवधि के दौरान

मछली और चिंगट ट्रालरों के प्रतिदिन की मछली पकड़ और चिंगट ट्रालरों के लंबे ट्रिप की मछली पकड़ का विश्लेषण किया गया। इससे यह व्यक्त हो गया कि वर्ष 1989-90के दौरान चिंगट ट्रालरों के मत्स्यन प्रयास में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव नहीं दिखाया पडा लेकिन वर्ष 1991 में उच्चतम पकड़ प्राप्त हुई और इन ट्रालरों की उत्पादन दर 23% थी।

प्रतिदिन औसत 30-35 एककों का परिचालन किया जाता है और इनमें से छोटे चिंगट ट्रालरों का अवतरण सबसे अधिक है, जो 52% है। वर्ष 1990 की दूसरी और तीसरी तिमाहियों में अधिकतम पकड़ और मत्स्यन प्रयास हुआ और चौथी तिमाही में इनमें घटती हुई।

वर्ष 1989 के दौरान मत्स्यन किए गए लगभग 28-35 एककों द्वारा चौथी तिमाही में कुल पकड़ के 25% का अवतरण हुआ। कुछ तिमाहियों में मत्स्यन प्रयास में हुए कुछ उतार-चढ़ाव के अतिरिक्त पकड़ और प्रयास में कहने लायक परिवर्तन नहीं हुआ।

विभिन्न प्रकार के ट्रालरों के वर्गवार अवतरण

अक्टूबर, 1989 से जून, 1991 के दौरान ट्रालरों द्वारा हुई उपास्थिमीनों की पकड़ कुल ट्राल उत्पादन का 69% था, जिसके बाद छोटे ट्रिप चिंगट ट्राल की पकड़ आई, जो 30% थी। छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालों द्वारा हुआ सूत्रपक्ष ब्रीम उत्पादन 53% था और मछली ट्राल और लंबे ट्रिप चिंगट ट्रालों द्वारा यह यथाक्रम 26% और 21% था। छोटे ट्रिप ट्रालों द्वारा मुल्लनों की भारी पकड़ हुई और ये छोटे ट्रिप ट्रालों द्वारा पकड़ी गई संपदाओं के प्रमुख वर्ग हैं।

छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालों द्वारा फीतामीनों की अच्छी पकड़ हुई और अन्य दो प्रकार के गिअरों द्वारा इनकी कम पकड़ हुई। गोटफिश और तुम्बिल की पकड़ बराबर ही रह गई। छोटे ट्रिप मछली ट्रालों के अवतरण का प्रमुख वर्ग कैरंजिड है। छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालों द्वारा हुआ झीगा उत्पादन 64% है और लंबे ट्रिप ट्राल द्वारा यह 28% है। छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालों द्वारा 52% कर्कटों का उत्पादन हुआ। लंबे ट्रिप ट्राल भी बड़ी मात्रा में कर्कटों को पकड़ सके लेकिन इनका कम मूल्य और लाने की असुविधा के कारण इन्हें तट पर नहीं लाए गए। स्क्वड और कटल फिश के अवतरण का मुख्य गिअर है छोटे ट्रिप चिंगट ट्राल (64%) और लंबे ट्रिप चिंगट ट्राल इसके बाद आता है (34%) और मछली ट्राल से इनका कम (2%) अवतरण होता है।

अभ्युक्तियाँ

मद्रास के मात्स्यकी विभाग द्वारा ट्रालिंग पर आयोजित अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण से यह सकित मिलता है कि मद्रास तट में ट्रालिंग के लिए अनुकूल धरातल वर्तमान सदी के आरंभ काल में विद्यमान था। फिर भी मद्रास क्षेत्र में इस शताब्दी के सातवाँ दशक के अंत में ही वाणिज्यिक ट्रालिंग शुरू हुआ और आठवाँ दशक से ट्रालिंग विदोहन का सक्रिय तरीका होने लगा।

नवी दशक में मद्रास के सारे ट्रालरों द्वारा हुआ मछली उत्पादन 1,416 टन था। इस काल में मद्रास की ट्राल मात्स्यकी की सबसे अधिक प्रगति हुई और तमिलनाडु के कुल मछली उत्पादन का 17% केवल मद्रास से ही प्राप्त हुआ। श्रीहरिकोटा-नेल्लूर तट में लंबे ट्रिप चिंगट ट्रालिंग परिचालन के शुरूआत के कारण वर्ष 1985-89 के दौरान का वार्षिक मछली उत्पादन पिछले वर्षों की अपेक्षा तिगुना अधिक था।

अधिकांश झींगों को 15-30 मी की गहराई से छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालरों द्वारा पकड़ा गया। लंबे ट्रिप चिंगट ट्रालरों द्वारा भी अच्छी झींगा पकड़ मिल गई। छोटे ट्रिप चिंगट ट्रालरों द्वारा वाणिज्य प्रमुख मछलियों जैसे सूत्रपक्ष ब्रीम, फीतामीन, गोटाफिश, बैराकुडा, मुल्लन और वाइट-बेट की बड़े पैमाने की पकड़ हुई। अन्य ट्रालरों द्वारा इन मछलियों की कम पकड़ हुई। तीसरी तिमाही में इन संपदाओं की अधिक पकड़ हुई।

श्रीहरिकोटा-नेल्लूर तट में परिचालित लंबे ट्रिप चिंगट ट्रालरों की पकड़ दर मद्रास और निकटतम क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक देखी गई। इसका कारण लंबे ट्रिप ट्रालरों का अधिक प्रयास और मत्स्यन क्षमता है।

वर्तमान अध्ययन यह व्यक्त करते हैं कि मद्रास तथा निकटस्थ तटों की तलमज्जी और कवचप्राणी संपदाओं के उत्पादन बढ़ाने के लिए एकको का परिचालन और भी बढ़ाना आवश्यक है।

एनाकुलम के कंडक्कडऊ में फस्ट लाइन एक्स्टनशन कार्यक्रम*

दरिद्रता निर्मार्जन को लक्ष्य करते हुये तकनोलजी का स्थानांतरण के ज़रिए देश में चार परियोजनाएं परिचालित की जा रही हैं। इन में प्रथम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन आनेवाला फस्टलाइन एक्स्टनशन कार्यक्रम है। दूसरा व तीसरा संघ कृषि मंत्रालय का नाशनल एक्स्टनशन सिस्टम व रूरल डेवलपमेन्ट और चौथा गैर सरकारी संगठनों का विस्तार परियोजनाएं हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का फस्टलाइन एक्स्टनशन कार्यक्रम तकनोलजी के स्थानांतरण को प्रवेगित करता है।

इस कार्यक्रम को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने की सी एम एफ आर आइ ने "एक तटीय ग्राम में योजनाबद्ध परिवर्तन-फस्ट लाइन एक्स्टनशन कार्यक्रम का एक नमूना" नामक एक विस्तार परियोजना आयोजित की। यह कार्य 1987 से 1990 तक सी एम एफ आर आइ की वैज्ञानिक श्रीमति जानसी गुप्ता के नेतृत्व में किया था। इस संस्थान की श्रीमति कृष्णा श्रीनाथ और के वी के व मात्स्यकी अर्थशास्त्र व विस्तार प्रभाग के कर्मचारियों ने भी इस परियोजना में

काम किये। विस्तार अभिकरणों और मछुओं को मात्स्यकी तकनोलजी से लाभ उठवाने के लिए वृत्तिक मार्गदर्शन से सज्ज करना इस परियोजना का लक्ष्य था।

परियोजना कार्यान्वयन एनाकुलम जिला के कंडक्कडऊ पंचायत में किया था जहाँ की अबादी में मछुए प्रमुख थे। इनके समाज अर्थिक स्थितियों के सर्वेक्षण के बाद उपलब्ध संपदाओं का अनुकूलतम उपयोग उचित तकनोलजियों पर अवबोध लाने के लिए विस्तार शिक्षा, तकनोलजी के प्रयोग से आय कमाने की रीति आदि विषयों को आगे रखकर विस्तार कार्यक्रम चलाया गया। फील्ड वर्क शुरू करने से पहले ग्राम के निवासियों को मिलाकर एक बैठक आयोजित की और एक फिशरमेन फोरम की स्थापना की। इसके बाद फील्ड लेवल कार्यक्रम कार्यान्वित किये जो नीचे बताये गये हैं।

मछलियों से विविध उत्पादों का निर्माण

कम दामवाली मछलियों से अचार, कटलेट, वेफेर्स और शुष्क मछली तैयार करने के बारे में भाषण और निर्देशन दिया

गया। मत्स्यन कम होनेवाले महीनों पर झींगा बीज संकलन, झींगा खेती, उद्यान कृषि आदि करने के लिए प्रशिक्षण दिया। झींगा बीज संकलन पर दिया गया प्रशिक्षण लोगों के बीच बहुत रुचि पैदा की। झींगा संवर्धन पर आयोजित क्लास व नारकल के डेमोन्स्ट्रेशन फार्म दिखाने केलिये आयोजित फील्ड ट्रिप भी बहुत ही उपयोगी साबित की। पश्च जलों की जो छोटी नालियां अनुपयोगी पडी है। उन में झींगा संवर्धन करने केलिए दिया गया निर्देशन भी लोगों का उद्बोधन करने में पर्याप्त था। सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित लघु झींगा बीज स्फुटनशाला पर दिया गया निर्देशन सुनकर बहुत से लोग इस प्रकार की योजना के कार्यान्वयन केलिए आगे आये। विविध विकासात्मक अभिकरणों से मछुओं को मिलाने

केलिए आयोजित कार्यक्रम और चर्चा में 75 मछुए सक्रिय रूप से भाग लिए। मात्स्यकी अनुसंधान में होनेवाली विकास और तकनोलजी के स्थानांतरण केलिए सी एम एफ एफ आर आइ द्वारा किये जानेवाला कार्य समझाने केलिए एक सेमिनार आयोजित किया। आयोजित विस्तार कार्यक्रमों के असर समझाने केलिये किया गया अध्ययन ने व्यक्त किया कि मात्स्यकी संबंधी नई तकनोलजी समझाने में ये कार्यक्रम बहुत ही सफल हुये है और इसलिए ही इसे स्वीकार करने केलिए मछुओं को बडा तात्पर्य है।

*श्रीमती जान्सी गुप्ता और श्रीमती कृष्णा श्रीनाथ, वैज्ञानिक
सी एम एफ आर आइ, कोची।

उत्तर तमिलनाडु के कूडल्लूर, पष्यार और कावेरिपट्टणम से तारली की भारी पकड*

हाल के वर्षों में तमिलनाडु के समुद्र से शोधित करनेवाली प्रमुख मात्स्यकी संपदा है, सारडिनेल्ला लॉगिसेप्स जाति की भारतीय तारली। पिछले पाँच वर्षों के दौरान तारली की पकड में विचारणीय वृद्धि हुई है। वर्ष 1985 को यहाँ से मिली वार्षिक पकड 4,270 टन थी तो 1990 तक आते आते यह 37,751 टन हो गई। वर्ष 1990 के आँकड़ों के अनुसार कुल पकड का 11.8% तारली थी। पकड का अधिकांश भाग चेगलपेट, साऊथ आरकोट जिला से प्राप्त हुआ था। रिपोर्टों के अनुसार तारली की पकड का प्रमुख भाग तमिलनाडु के उत्तरी जिलाओं से प्राप्त हुआ था। यह इस प्रांत के कुल तारली उत्पादन का 60% आंका गया है।

तारलियों को पकडने केलिए सब से अनुयोज्य जाल बैग-नेट (इडा-वलै) देखा गया था। इसके अतिरिक्त कावाला

वलै और तट्टकावाला वलै का भी उपयोग यानों के ज़रिए किया था। कूडल्लूर और पष्यार के मात्स्यकी बंदरगाहों में इडा-वलै के ज़रिए 1989-90 के दौरान भारी मात्रा में तारली की पकड हुई थी। मई-जून के दौरान 110-114 मि मी की तरुण तारली अधिक थी तो सितंबर में 165-169 मि मी की बडी तारली मिली थी। बाकी महीनों में मिली तारली 140-159 मि मी आकार की थी।

यद्यपि तारली अधिक मात्रा में यहाँ से पकडी गई तथापि मछुओं को इस से कम फायदा हुआ था क्योंकि तमिलनाडु में तारली पसंद की मीन न होने के कारण दाम बहुत कम मिला था। सिर्फ बडी तारलियों का विपणन बाहर के मार्केटों में किया था, बाकी फाक्टरीवालों को सुखाकर बेचा गया था।

*सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र के पी. के. महादेवन पिल्लै सी एम एफ आर आइ कूडल्लूर क्षेत्र केन्द्र के एम. राधाकृष्णन और एम. मणिवासगम की रिपोर्ट

विशाखपट्टणम से हुक एंड लाइन द्वारा वैहू (Wahoo) एकांतोसिबियम सोलंड्री का प्राप्ति वृत्तान्त*

विशाखपट्टणम के लॉसन्स उपसागर से हुक एंड लाइन द्वारा एकांतोसिबियम सोलंड्री की पकड़ की पहली रिपोर्ट फरवरी, 1988 को मिली। इसके बाद और भी नमूनों को प्राप्त किया जिनमें से सबसे छोटे नमूने को लेकर इसकी विशेषता नोट कर ली गई है। इसकी लंबाई 99.5 से मी और भार 5.6 कि ग्रा था। इसके गणनीय और आकृतिमान लक्षण का निरीक्षण किया गया।

इस नमूने में लनीनिकस वंश के परजीव कॉपीपोड का उत्पीडन देखा गया। कॉपीपोड को प्रमुख रूप से असीय (Pectoral) भाग के पीछे अधरपार्श्व (Ventro lateral) भाग में देखा था। शरीर के अन्य भागों में भी इस परजीव का उत्पीडन था।

लॉसन्स उपसागर में सभी गिअरों द्वारा किए जानेवाले वार्षिक अवतरण का 22.5% सीर फिश है। इनमें स्कोम्बेरोमारस गेटेटस और एस. कमेसिन दो प्रमुख जातियाँ हैं। एस. कोरिआनस को हुक एंड लाइन द्वारा बहुत कम पकड़ा जाता है और एस. लिनिओलैटस अन्य गिअरों में विरल रूप से फंस जाता है। ए. सोलंड्री को परि-उष्णकटिबंधीय (Circum-tropical) समुद्र में प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ता है। राज ने 1960 में पसफिक महा समुद्र में वैहू का वितरण पाटर्न के बारे में उद्यतन विवरण प्रस्तुत किया था।

अक्तूबर 1982 के दौरान कारवार तटों से भी इसकी उपस्थिति के बारे में दुलकड आदि ने रिपोर्ट की है। एक मध्य वेलापवर्ती महा समुद्रीय जाति होने पर भी ए. सोलंड्री को कहीं भी मात्स्यिकी में शामिल नहीं किया है। लेकिन कोल्लटे और नाअन (1983) ने रिपोर्ट की है कि पसफिक और अटलान्टिक महासमुद्रों से वर्ष में 58-218 टन वैहू की पकड़ होती है। यह भी रिपोर्ट किया गया है कि लंबी डोर मात्स्यिकी में वैहू का अवतरण उप-पकड़ (by-catch) के रूप में होने पर भी पसफिक, अटलान्टिक और भारतीय महासमुद्र के उष्णकटिबंधीय और उपोष्ण जल में इसका वितरण अधिक रूप से दिखाया जाता है। अतः भूमध्यरेखीय इंडो-पसफिक समुद्र में यह जाति भारी रूप से फैली हुई है।

अक्तूबर-मार्च के दौरान आंध्रा के उत्तर तट, दक्षिण केरल और कर्नाटक तट में ए. सोलंड्री की उपस्थिति की रिपोर्ट की गई है। इस समय बंगाल उपसागर की ओर पृष्ठीय धारा (Surface current) अधिक है और इस धारा के साथ वैहू भी बंगाल उप सागर की ओर प्रवास करते हुए भारत के पूर्व और दक्षिण पश्चिम तटों में प्रवेश करता है।

*के. विजयकुमार और एस. चन्द्रशेखर, सी एम एफ आर आइ का विशाखपट्टणम अनुसंधान केंद्र

तमिलनाडु के नागपट्टिनम में धँसा गया स्पेर्म तिमि*

भारतीय महासमुद्र में स्पेर्म तिमि को अरेबियन समुद्र के 20° N और 50° व 80° E के बीच केन्द्रीकृत देखा गया है। पर तिमि के सम्बन्ध में उपलब्ध रिपोर्ट उनकी उपस्थिति के बारे में नहीं बल्कि उनके धँस जाने के सम्बन्ध में है। हाल ही में तमिलनाडु के नागपट्टिनम से इस प्रकार की एक रिपोर्ट मिली है जिसके अनुसार 2 स्पेर्म तिमि यहाँ धँस गई हैं। दिसंबर 18 को नागपट्टिनम के मछुए एक अधमरा तिमि को तट पर घसीटकर लाए जिसकी 5 घंटे के बाद मृत्यु हुई।

बाह्य लक्षणों के अनुसार इसको बच्ची स्पेर्म तिमि

पहचाना गया इसकी जाति थी फैसेटर माक्रोसेफालस लिन्सेस। लंबाई थी 3.71 मी और भार 700 कि ग्राम था। लंबाई के अनुसार इसकी आयु 3 महीने अनुमानित की गई।

दूसरी तिमि को मरी स्थिति में 18 जनवरी को नागपट्टिनम के विषुतमवाडी से मिला। यह भी बच्ची स्पेर्म तिमि थी। लंबाई 9.7 मी और भार 5 टन था। इसकी अनुमानित आयु थी 5 वर्ष। रिपोर्ट के अनुसार तिमियाँ धँसने का स्थान उत्तरी तट और समय नवंबर और दिसंबर के महीने हैं क्योंकि इस समय में उत्तर पूर्वी मन्सून और हवा के कारण समुद्र प्रक्षुब्ध रहता है।

*प्रतिवेदक : सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के पी. नम्मलवार, एस. कृष्णापिल्लै और एम. बदरुद्दीन, नागपट्टिनम फील्ड सेन्टर के श्री वी. तानापति, आर. सोमु और वी. शिवस्वामी।

आंध्रा तट के विशाखपट्टणम में धूसर रंग के किशोर स्पिन्नर डॉल्फिन स्टेनेल्ला लौगिरोस्ट्रिस का अवतरण*

विशाखपट्टणम से 21 वीं अगस्त, 1991 को 40 मी की गहराई में गिलनेट का परिचालन करने पर अन्य मछलियों के साथ 70.5 से मी की कुल लंबाई वाले धूसर रंग की एक छोटी मादा स्पिन्नर डॉल्फिन स्टेनेल्ला लौगिरोस्ट्रिस को फँसाया था।

यह नमूना काला धूसर रंग का था जिसका पृष्ठ (dorsal) भाग काले रंग का और अधर (ventral) भाग सफेद रंग का था। अरित्र (flipper) से आँख तक काले धूसर रंग की एक

पट्टी भी थी। पहले रिपोर्ट के अनुसार इनके नवजात नमूनों की लंबाई लगभग 0.8 मी है। इस नमूने की लंबाई और छोटे दौंते देखने पर ऐसे लगा कि यह नमूना नवजात है। यद्यपि बेरावल और मंडपम से छोटे स्पिन्नर डॉल्फिनो की उपस्थिति के बारे में रिपोर्ट मिली है तथापि भारतीय समुद्र से प्राप्त डॉल्फिनो में यह सबसे छोटा है।

*सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम अनुसंधान केंद्र के श्री सी. वी. शेषगिरि राव और के. नारायण राव द्वारा तैयार किया ब्योरा।

दक्षिण कन्नड के कोटा तट पर धँसा गया बालिनोप्टीरा फैसालस*

तारीख 14.4.1991 को कोटा तट पर एक तिमिंगल का शव धँस गया। अखबार में वार्ता देखकर दो दिन के बाद जब लेखक इसको जाँच के लिए गया तब सारा मांस सड़ा हुआ देखा था। शव की लंबाई 35 फीट और चौड़ाई

10 फीट थी। हनु में देखा गया खँजा (groove) और कशेरुक में दिखाये गये कटक (Spine) के आधार पर पहचान किया गया कि यह बालिनोप्टीरा फैसालस है।

*सी. एम एफ आर आइ के मोंगलूर अनुसंधान केंद्र के सी. पुरन्धरा और वामन नाइक द्वारा तैयार किया विवरण

टूटिकोरिन में हम्पबैक डॉल्फिन, सूसा चैनेन्सिस का अवतरण*

साधारण तौर पर भारत के तटों की नियमित मात्स्यिकी में डॉल्फिनो का अवतरण प्रमुख न होने पर भी ड्रिफ्ट गिल नेट, ट्रालर और कोष संपाशों द्वारा आकस्मिक रूप से इन्हें पकड़ा जाता है। पूर्व पसफिक क्षेत्र की तुलना में भारत के तटों में डॉल्फिनो का नाश कम दिखाया पड़ता है।

दिनांक 24-1-1991 को उत्तर टूटिकोरिन के एक अवतरण केंद्र में 227 से मी की कुल लंबाई और 85 कि ग्रा भार वाले एक डॉल्फिन का अवतरण हुआ। दोनों हनुओं (Jaws) के दौंते की संख्या के आधार पर यह पहचान गया कि यह सूसा चैनेन्सिस जाति की मादा डॉल्फिन है।

इस डॉल्फिन को टूटिकोरिन में प्रचलित यंत्रिकृत वल्लम (आंतरिक इंजन लगाया गया बोट) द्वारा किए गए ड्रिफ्ट गिल नेट परिचालन से प्राप्त हुआ। हाल ही में डॉल्फिन का मांस कांटा-डोर (hook & line) मात्स्यिकी में चारा के रूप में उपयुक्त करने के कारण मछुए लोग इस डॉल्फिन को तट पर लाए और 68/- रु को नीलाम किया।

*सी एम एफ आर आइ के टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के जी. अरुमुगम, एस. राजपाकियम और टि. एस. बालसुब्रमण्यन द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट।